थीम 1: सुनना और बोलना

बच्चों की भाषा धीरे-धीरे परिपक्वता की ओर बढ़ने लगती है। गोष्ठियों, परिचर्चा, उद्घोषणा आदि को सुनकर तुरंत समझकर प्रतिक्रिया देते हैं। **विशिष्ट संदर्भों में प्रयुक्त शब्दावली, मुहावरे-लोकोक्तियों का अर्थ समझने लगते हैं।** अपनी बात आत्मविश्वास के साथ सटीक शब्दों में कहते हैं। बोलने में प्रवाह और उतार-चढ़ाव होता है।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- टीवी पर प्रसारित चर्चा, संगोष्ठी, सोशल मीडिया और इंटरनेट की दृश्य-श्रव्य सामग्री को सुनकर भली-भाँति समझ सकेंगे और आवश्यकता अनुरूप अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कर सकेंगे। अपने विचारों का विस्तार करते हैं।
- पढ़ी, सुनी या देखी बातों जैसे – सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों, मुद्दों, सामाजिक सरोकारों आदि पर अपनी व्यक्तिगत राय बना सकेंगे। बेझिझक चर्चा कर सकेंगे और प्रश्न उठा पाएंगे।
- रेडियो, टीवी, आदि पर सुनी-देखी ख़बरों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकेंगे।
- विविध कलाओं, जैसे – हस्तकला, वास्तुकला, नृत्य कला आदि में प्रयुक्त भाषा को समझ सकेंगे और अपनी भाषा में इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग कर सकेंगे।
- वक्ता की बात को आलोचनात्मक दृष्टि से सुनेंगे और समझ सकेंगे।
- परस्पर चर्चा करते समय दूसरे के विचार से असहमत होने पर भी धैर्यपूर्वक सुनेंगे और पूर्ण शिष्टाचार का परिचय देते हुए उसके विचार समझ सकेंगे और अपने विचार कह सकेंगे।
- प्रश्नों को सुनकर समझ सकेंगे और उनके उपयुक्त उत्तर दे सकेंगे।
- अलग-अलग संदर्भों में प्रयुक्त भाषा-शैली को समझते हुए उसका आनंद ले सकेंगे और अपनी भाषा में अपेक्षित शैली को प्रयुक्त कर सकेंगे।
- साहित्यिक विधाएँ – कहानी, कविता, नाटक आदि का सुनकर-देखकर उसका आनंद ले सकेंगे।
- लिंग/ वचन को ध्यान में रखकर अपनी बात कह सकेंगे।
- मल्टी-मीडिया (ग्राफ़िक्स, तस्वीरें, संगीत, ध्वनि आदि) का प्रयोग करते समय दृश्य – सामग्री की प्रस्तुति प्रवाहपूर्ण भाषा में आत्मविश्वास से कर सकेंगे।
- प्रभावशाली ढंग से वाक् प्रस्तुति (भाषण, वाद-विवाद, कहानी कहना, आशुभाषण आदि) कर सकेंगे।
- उनके विचारों को चुनौती दिए जाने पर भी अपने व्यवहार में ठहराव के साथ अपनी राय दे सकेंगे।

सुनना और बोलना

सुझावित विषय / क्षेत्र	सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	सुझावित अधिगम स्रोत
▸ पाठ्य – सामग्री एवं अन्य अपठित सामग्री पर विविध प्रकार के प्रश्न ▸ परिचर्चा के विषय (बाल श्रम, मच्छरों का कहर, लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता)	▸ ऑडियो सुनवाएँ और प्रश्न पूछें। विविध विधाओं की सामग्री सुनवाने के लिए विविध परिस्थितियाँ / अवसर प्रदान करें। ▸ अतिथियों को आमंत्रित कर उनके वक्तव्य सुनने के अवसर दें, मल्टीमीडिया सामग्री सुनाकर – दिखाकर विद्यार्थियों को अपनी	▸ आमंत्रित अतिथियों के भाषण व वक्तव्य ▸ विविध प्रकार की ऑडियो / वीडियो सामग्री ▸ साहित्यिक लेख (अख़बार, पत्रिकाओं से)

सुनना और बोलना

सुझावित विषय / क्षेत्र	सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	सुझावित अधिगम स्रोत
▸ अपनी कक्षा के स्तर की शब्दावली ▸ पी.पी.टी. या वीडियो द्वारा प्रस्तुत दृश्य सामग्री ▸ सूचनाएँ, जानकारियाँ, विभिन्न प्रकार की तालिकाएँ ▸ विभिन्न संदर्भों : सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक आदि की भाषा ▸ समाचार-पत्र, टीवी, विज्ञापन आदि की भाषा ▸ परिचर्चा, भाषण, वाद-विवाद, कहानी आदि में प्रयुक्त भाषा ▸ मल्टी-मीडिया का प्रयोग करते समय विभिन्न अंगों (जैसे ग्राफ़िक्स, तस्वीरें, संगीत, ध्वनि आदि) का दृश्य सामग्री में प्रस्तुति ☛ *विषय : किसी वाद्ययंत्र पर* ☛ *ऐतिहासिक इमारत* ☛ *ऐतिहासिक स्थल* ☛ *किसी प्रदर्शनी पर* ☛ *किसी आपदा पर* ▸ सभा या सामूहिक चर्चा बिंदुओं की प्रस्तुति ▸ संयोजक (Facilitator) की आलोचनात्मक टिप्पणियाँ ▸ अपने मित्रों और अपने विचारों में तालमेल बिठाना ▸ नियोजित मौखिक प्रस्तुति करना, उद्घोषणा करना आदि	प्रतिक्रिया देने के अवसर दें। वाक्, वाद-विवाद और आशुभाषण के अवसर प्रदान करें। जब मैं पहली बार मंच पर गई, जब मित्र से अनबन हो गई, परीक्षाओं की आवश्यकता आदि। ▸ श्रुतभाव-ग्रहण के लिए अलग-अलग अभ्यास (बहुवैकल्पिक प्रश्न, सही-गलत वाले प्रश्न, कथ्य सुनते हुए तालिका भरना, चित्र भरना आदि) करवाएँ। ▸ सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार के लेख, फिल्म, ऑडियो वीडियो सामग्री को देखने, सुनने और समझने के अवसर प्रदान करें। ▸ अपने परिवेश, समय और समाज से जुड़े विषयों पर रचनाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध करवाएँ। ▸ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों जैसे – अभिनय, रोल-प्ले, कविता – पाठ, वाक् प्रस्तुति, परिचर्चा आदि के आयोजन करें। ▸ साहित्य और साहित्यिक तत्वों की समझ बढ़ाने के अवसर दें। ▸ बारी-बारी से बच्चों को 'एंकर' बनने के अवसर दें। ▸ मल्टी-मीडिया का प्रयोग करते हुए परियोजना कार्य करवाएँ।	▸ पुस्तकालय में प्रासंगिक और तात्कालिक / समसामयिक पुस्तकें ▸ नेट सुविधा / मल्टीमीडिया ▸ श्रुतभाव- ग्रहण सामग्री

थीम २: पढ़ना एवं लिखना (पठन एवं लेखन कौशल)

बच्चे पाठ्य-पुस्तक से इतर अन्य पुस्तकें, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ पढ़कर समझ बनाते हैं और आनंद लेते हैं। **तरह-तरह के कोशों को अपनी भाषिक क्षमता के संवर्द्धन के लिए प्रयोग में लाते हैं**। सभी विधाएँ – कविता, कहानी, नाटक, यात्रा-विवरण, रिपोर्ट, संस्मरण, लेख आदि में रचनात्मक लेखन करते हैं। लेखन में व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करते हैं। उनके लेखन में परिपक्व भाषा की झलक मिलती है।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- अखबार, पुस्तकें, पत्रिकाओं आदि में सामाजिक घटनाओं, मुद्दों, सरोकारों को पढ़कर समझ सकेंगे और उनपर अपने विचार लिखकर प्रस्तुत कर सकेंगे।
- **पाठ्य-सामग्री पढ़कर उसका केंद्रीय भाव समझ सकेंगे और समसामयिक संदर्भों में उसे जोड़कर देख सकेंगे। उसकी प्रासंगिकता पर अपने विचार लिख सकेंगे**।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की उपलब्ध सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित सामग्री आदि) को समझकर पढ़ सकेंगे और उस पर अपनी आलोचनात्मक प्रतिक्रिया लिख सकेंगे।
- **लिखते समय क्रमबद्धता, संक्षिप्तता एवं प्रकरण की एकता बनाए रख सकेंगे।**
- शब्दकोष में अर्थ की जानकारी के साथ-साथ अन्य जानकारी को भी अपनी भाषा / लेखन में प्रयुक्त कर सकेंगे।
- **काव्य-रचना के अर्थ को विस्तार दे सकेंगे।**
- संक्षिप्त में कहे गए विचार को विस्तार से लिख सकेंगे और विस्तृत सामग्री को संक्षिप्त में लिख सकेंगे।
- लेखक के विचारों को उसकी दृष्टि से पढ़कर समझ सकेंगे।
- विभिन्न शब्दों, पदबंधों आदि को विभिन्न संदर्भों के अनुसार समझेंगे और अपने लेखन में उसका प्रयोग कर सकेंगे।
- अपने वक्तव्य को तर्कपूर्ण, प्रभावपूर्ण ढंग से और उदाहरण देकर लिख सकेंगे।
- विभिन्न प्रिंट और डिजिटल माध्यमों से जानकारी प्राप्त करके अपने लेखन में उसका उपयोग कर सकेंगे।
- व्याकरण सम्मत भाषा में विद्यालयी पत्रिका के लिए लेख, कहानी, कविता, नाटक आदि लिख सकेंगे।
- किसी भी रचना को दूसरी विधा में रूपांतरित कर सकेंगे।
- अलग-अलग तरह के प्रश्न पढ़कर उनके अनुरूप उत्तर लिख सकेंगे।

पढ़ना एवं लिखना

सुझावित विषय / क्षेत्र	सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	सुझावित अधिगम स्रोत
• पाठ्य सामग्री और अपठित सामग्री एवं उस पर प्रश्न • पाठ्य सामग्री के केंद्रीय भाव का अनुमान एवं लेखन • अपने ज्ञान के आधार पर विविध विधाओं की समझ	• विभिन्न विधाओं की रचनाओं जैसे – कविता, कहानी, एकांकी आदि को भावपूर्ण ढंग से पढ़वाएँ। • विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्रदान करें जिसमें वे विभिन्न विधाओं को उपयुक्त शैली में पढ़ सकें और लिख सकें। • ऐसे प्रश्नों पर चर्चा करें और उनके उत्तर लिखवाएँ, जिनमें बच्चे अपनी पठित सामग्री को अन्य आयामों से जोड़कर देख-समझ सकें। • विभिन्न विधाओं को परस्पर रूपांतरित करने के अवसर	• साहित्यिक - सामग्री के लिए पुस्तकें और पत्रिकाएँ • प्रासंगिक, तात्कालिक / समसामयिक पुस्तकें / पत्रिकाएँ • नेटसुविधा/ मल्टीमीडिया • भाषा – खेल

पढ़ना एवं लिखना

सुझावित विषय / क्षेत्र	सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	सुझावित अधिगम स्रोत
▷ अपनी व्यक्तिगत राय से भिन्न पाठ्य-सामग्री के मूलभूत तथ्यों की पहचान ▷ पाठ्य सामग्री की तुलना में भाव साम्य की दृष्टि से अन्य रचनाएँ ▷ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप शब्दों, मुहावरों, पदबंधों का चयन एवं प्रयोग ▷ पाठ्य सामग्री को टुकड़ों में बाँटकर अपनी समझ का संवर्द्धन ▷ सत्य, काल्पनिक अनुभवों का विस्तार से और क्रमबद्धता से लेखन ▷ उपयुक्त कार्यकारण संबंध और श्रोताओं के अनुरूप लेखन ▷ विभिन्न प्रिंट एवं डिजिटल माध्यमों से प्राप्त उपयुक्त जानकारी ▷ व्यंग्य, रूपक, उपमा आदि की समझ ▷ वर्ष के अंत तक साहित्य की विभिन्न विधाएँ, कहानी, एकांकी, कविता / निबंध, लेख आदि की समझ और लेखन	प्रदान करें। ▷ सक्रिय और जागरूक बनाने के लिए समसामयिक लेख पढ़वाएँ और उन पर अपनी प्रतिक्रिया लिखने को कहें। ▷ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने के लिए अतिरिक्त अध्ययन के लिए प्रेरित करें और पुस्तकें उपलब्ध करवाएँ। ▷ अपने परिवेश, समय और समाज से जुड़े विषयों पर रचनाएँ उपलब्ध करवाएँ और लेखन के अवसर भी दें। ▷ पाठ्य सामग्री की तुलना में भाव साम्य की दृष्टि से उदाहरण देने को कहें और बच्चों को अपनी अपनी जानकारी साझा करने को प्रेरित करें। ▷ विभिन्न कोशों से बच्चों का परिचय करवाएँ और उन्हें देखने-समझने के अवसर दें। ▷ शब्दों / भाषा के इतिहास आदि की जानकारी प्राप्त करने के लिए बच्चों में रुचि पैदा करने का प्रयास करें। ▷ ऐसी गतिविधियों का आयोजन करवाएँ जिनमें पाठ्य-सामग्री को टुकड़ों में बाँटकर बच्चे अपनी-अपनी टिप्पणी दें। ▷ भाषा खेलों का आयोजन करें। ▷ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में बच्चों को 'एंकर' की प्रस्तुति धन्यवाद ज्ञापन, अतिथि-परिचय, कार्यक्रम संचालन के लिए वक्तव्य आदि के लेखन के अवसर दें और उन्हें प्रस्तुत करने के अवसर दें। ▷ इस प्रकार की प्रस्तुति कक्षा में भी करवाएँ ताकि सभी बच्चों को मौका मिल सके। ▷ ऐसे परियोजना कार्य करवाएँ जिनमें बच्चे विभिन्न प्रिंट एवं डिजिटल माध्यमों की जानकारी का प्रयोग कर सकें। ▷ कविताएँ पढ़ाते समय व्यंग्य, रूपक, उपमा आदि की ओर संकेत करें और समझाएँ।	▷ लेखन- प्रतियोगिताएँ ▷ प्रपत्र ▷ विभिन्न कार्यक्रम ▷ तरह-तरह के कोश ▷ गतिविधियाँ

थीम 3: व्याकरण और भाषा

बच्चे भाषायी अनुप्रयोग समझने लगते हैं। भाषा की जटिल संरचनाओं को समझने लगते हैं। वे अपनी लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति में व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करते हैं। पद-भेद, शब्द-भंडार, वाक्य-रचना की पहचान करते हैं। रचनात्मक लेखन में निबंध, पत्र, डायरी, रिपोर्ट, विज्ञापन, कहानी, नाटक आदि लिखते हैं।

अधिगम उपलब्धियाँ (Learning outcomes):

- हिंदी भाषा में प्रयुक्त शब्दावली और विभिन्न भाषा शैलियों को समझ सकेंगे और मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति में उनका प्रयोग कर सकेंगे।
- विभिन्न भाषाओं और उनकी लिपियों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- तत्सम- तद्भव रूपों को समझेंगे और अपनी भाषा में प्रयुक्त कर सकेंगे।
- उपसर्ग-प्रत्यय का तात्पर्य समझकर उन्हें शब्दों में जोड़कर नए अर्थ समझ सकेंगे। उनके जुड़ने से अर्थ-परिवर्तन को भी जान सकेंगे।
- संज्ञा के तीन भेद व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा की पहचान और भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण कर सकेंगे। व्यक्तिवाचक संज्ञा के जातिवाचक संज्ञा प्रयोग या इसके उलट संज्ञा प्रयोग समझेंगे और प्रयोग कर सकेंगे।
- सर्वनाम के भेदों - पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक की पहचान और उसका सही उनका सही प्रयोग कर सकेंगे। उनके रूपावली वर्ग पहचान सकेंगे।
- विशेषण के चार भेद – गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, सार्वनामिक विशेषण समझेंगे और उनके लिंग / वचन के आधार पर सही प्रयोग कर सकेंगे। अन्य पदों से विशेषण बना सकेंगे।
- कर्म के आधार पर दो भेद - अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया की पहचान कर सकेंगे। **क्रिया के अन्य भेद – प्रेरणार्थक, संयुक्त आदि की पहचान कर सकेंगे**।
- **कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य की पहचान और उनका प्रयोग अपनी भाषा में कर सकेंगे**। परस्पर रूपांतरण भी कर सकेंगे।
- **अव्यय – क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात - सब की पहचान और प्रयोग को समझ सकेंगे**। क्रियाविशेषण के भेद (रीतिवाचक, परिमाणवाचक, कालवाचक, स्थानवाचक), समुच्चयबोधक के भेद (समानाधिकरण और व्याकरण) की पहचान भी कर सकेंगे।
- व्यावहारिक भाषा में लिंग और वचन का प्रयोग कर सकेंगे। वाक्यों में लिंग परिवर्तन और वचन परिवर्तन कर सकेंगे।
- काल के तीनों भेद – भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल का समुचित प्रयोग कर सकेंगे।
- लिखित और मौखिक भाषा में सही परसर्गों का प्रयोग कर सकेंगे।
- अर्थ के आधार पर वाक्य भेद की पहचान कर सकेंगे और परस्पर परिवर्तन भी कर सकेंगे। भेद – विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक और संकेतवाचक को पहचान सकेंगे। वाक्य शोधन भी कर सकेंगे।
- **रचना के आधार पर भेद – सरल, संयुक्त, मिश्रित को पहचानेंगे और वाक्य परस्पर रूपांतरित कर सकेंगे।** वाक्य के अंगों – **उद्देश्य - विधेय को पहचान सकेंगे**।
- विराम-चिह्नों का सही प्रयोग अपनी भाषा में कर सकेंगे। 'की' और 'कि' तथा 'रि' और 'ऋ' के अंतर की पहचान कर सकेंगे। अनुस्वार तथा 'र' के विभिन्न रूपों को ठीक से अपनी भाषा में प्रयुक्त कर सकेंगे।

- शब्दों के विभिन्न रूपों विलोम, पर्यायवाची, अनेक के लिए एक शब्द, समरूपी भिन्नार्थक शब्द, अनेकार्थी शब्दों को समझेंगे और इस तरह के नए शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर पाएँगे।
- मुहावरेदार भाषा समझ सकेंगे और अपने लेखन में उनका प्रयोग कर सकेंगे। **नए मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग भी समझेंगे**।
- अपठित अनुच्छेद समझ सकेंगे और अपनी भाषा में प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों का प्रारूप समझते हुए पत्र लेखन कर सकेंगे।
- निबंध-लेखन में उनकी भाषा, विचार, शैली में परिपक्वता की झलक दिख सकेगी।
- विज्ञापन लेखन – तीनों प्रकार (वर्गीकृत, जनहित में जारी और उत्पाद बिक्री हेतु) के विज्ञापनों के अंतर को समझेंगे और अलग-अलग विज्ञापन तैयार कर सकेंगे।
- डायरी के प्रारूप को समझते हुए विशेष दिन की डायरी लिख सकेंगे।
- **नोटिस – प्रारूप के अनुसार आवश्यकतानुसार नोटिस लिख सकेंगे।**
- **रिपोर्ट / प्रतिवेदन लेखन** – विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों पर रिपोर्ट लिख सकेंगे।
- **सुर्खियाँ लेखन** – विस्तृत खबरें पढ़कर उनकी सुर्खियाँ लिख सकेंगे।

पढ़ना एवं लिखना

सुझावित विषय / क्षेत्र	सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	सुझावित अधिगम स्रोत
▶ शब्द विचार ▶ उपसर्ग – प्रत्यय ▶ तत्सम – तद्भव ▶ संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, काल और उनके भेद ▶ अव्यय भेद ▶ क्रिया विशेषण ▶ संबंधबोधक ▶ समुच्चयबोधक ▶ निपात ▶ विस्मयादिबोधक ▶ अकर्मक-सकर्मक क्रिया के अतिरिक्त प्रेरणार्थक क्रिया, संयुक्त क्रिया, मिश्र क्रिया, नामधातु क्रिया ▶ अर्थ के आधार पर वाक्य भेद ।	▶ विभिन्न लिपियों – देवनागरी – हिंदी, संस्कृत, नेपाली; रोमन – अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन; फ़ारसी – उर्दू, अरबी, फारसी; गुरमुखी – पंजाबी आदि की चर्चा करें। ▶ शब्दों के तत्सम – तद्भव रूप की जानकारी दें। नवीन सोच की ओर भी संकेत करें कि 'तत्सम' शब्द वे हैं जो किसी अन्य भाषा से ज्यों के त्यों ले लिए गए हैं, जैसे – मुख, मस्तक, कॉलेज, डॉक्टर, डोसा, उपमा, सिर्फ़, ईमानदार आदि। 'तद्भव' शब्द वे हैं जिन्हें हिंदी भाषा के अनुरूप ढाल लिया गया है, जैसे – माता, किवाड़, साग, अस्पताल आदि। ▶ सर्वनाम के भेदों की पहचान करवाएँ और उनका सही प्रयोग करवाएँ। ▶ सर्वनाम के भेद समझाएँ और बताएँ। कि जब संदर्भ के साथ यह, वह, इन्हें, उन्हें, उसे आदि का प्रयोग हो तब तो निश्चयवाचक सर्वनाम मान सकते हैं। जब संदर्भ न हो तब पुरुषवाचक भी हो सकता है और निश्चयवाचक भी। इसका निर्णय कैसे लें ? इसे इस प्रकार स्पष्ट करें कि यदि व्यक्ति के लिए यह, वह का प्रयोग हुआ है तब तो वह पुरुषवाचक सर्वनाम होगा और वस्तु, घटना	▶ भाषा खेल ▶ विज्ञापनों के नमूने पत्र-पत्रिकाओं से ▶ डायरी लेखन की कुछ पुस्तकें ▶ नोटिस के नमूने, अख़बार की सुर्ख़ियों के नमूने ▶ डायरी लेखन ☛ *तिथि* ☛ *समय* ☛ *दिन* ☛ *स्थान* ▶

पढ़ना एवं लिखना

सुझावित विषय / क्षेत्र	सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	सुझावित अधिगम स्रोत
➢ रचना के आधार पर वाक्य भेद और परस्पर परिवर्तन ➢ विराम चिह्न ➢ मुहावरे / लोकोक्तियाँ ➢ रोचक अपठित गद्यांश / पद्यांश (स्तारानुकूल) ➢ पत्र लेखन – औपचारिक और अनौपचारिक ➢ निबंध लेखन (200 शब्दों में) ➢ विज्ञापन लेखन / प्रस्तुति – वर्गीकृत (classified) जनहित में जारी, उत्पाद आदि से संबंधित विज्ञापन ➢ डायरी लेखन ➢ नोटिस सूचना लेखन ➢ प्रतिवेदन / रिपोर्ट लेखन ➢ सुर्खियाँ लेखन	आदि के लिए आया है तो निश्चयवाचक सर्वनाम होगा। इससे समस्या का काफ़ी हद तक समाधान हो जाएगा, जैसे – ☛ **उसे** बुला लाओ / **वह** बाहर खड़ी है / **यह** तो यहाँ ही बैठा है। इन वाक्यों में उसे, वह, यह व्यक्तियों के लिए आया है यह विभिन्न क्रियाओं से स्पष्ट है। इन्हें पुरुषवाचक माना जाना चाहिए। ☛ **यह** यहाँ रख दो। **वह** वहीं पड़ा रहने दो। **उसे** उठा लाओ। इन वाक्यों में यह, वह, उसे वस्तुओं के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, अतः इन्हें निश्चयवाचक मानना चाहिए। ☛ कुछ अन्य वाक्य देखिये- ☛ **उन्हें** भी बुला लो / **उन्हें** रखा रहने दो / **उन्हें** रहने दो। पहले वाक्य में 'उन्हें' व्यक्तियों के लिए ही प्रयुक्त हुआ है जबकि दूसरे वाक्य में वस्तुओं के लिए और तीसरे में व्यक्ति भी हो सकते हैं और वस्तु भी। ऐसी स्थिति में दोनों संभव हैं। संदर्भ ज्ञात हो तो उसी के अनुरूप भेद किया जा सकता है अन्यथा दोनों भेद माने जा सकते हैं। ➢ सार्वनामिक विशेषण को समझना आवश्यक है। **यह** अलमारी बड़ी है और **वह** छोटी। इस वाक्य में 'यह' अलमारी की विशेषता बता रहा है इसलिए सार्वनामिक विशेषण है और 'वह' अलमारी के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। इसलिए सर्वनाम है। ☛ सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण दोनों रूप रचना के स्तर पर समान होते हैं, केवल वाक्य प्रयोग के स्तर पर ही दोनों में अंतर होता है। जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं वे सर्वनाम होते हैं। लेकिन जब कोई सर्वनाम किसी संज्ञा (विशेष्य) के साथ लगकर संज्ञा की विशेषता बताए तो सार्वनामिक विशेषण होता है, जैसे – **कुछ** फल लाओ। **हमारे** देश के जवान चौकस रहते हैं। वाक्यों में कुछ और हमारे शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।	तारीख नोटिस __________ शीर्षक __________ __________ हस्ताक्षर

पढ़ना एवं लिखना		
सुझावित विषय / क्षेत्र	**सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया**	**सुझावित अधिगम स्रोत**
	➢ विशेषण बनवाएँ, जैसे – यह-ऐसा, वह-वैसा, सुख-सुखद आदि। ➢ क्रिया – कर्म के आधार पर दो भेद – अकर्मक और सकर्मक की पहचान करवाएँ। ➢ प्रेरणार्थक क्रिया – प्रेरणार्थक क्रिया और सकर्मक क्रिया के अंतर को समझाएँ। जैसे - ☛ पावनी पतंग उड़ा रही है। ☛ पावनी तितली उड़ा रही है। ☛ पहले वाक्य में पावनी क्या उड़ा रही है? – पतंग (निर्जीव संज्ञा) ☛ दूसरे वाक्य में पावनी क्या उड़ा रही है? – तितली (सजीव संज्ञा) ☛ 'पतंग' निर्जीव है। अतः पावनी उसमें डोर बाँधकर उड़ा रही है। यहाँ 'उड़ाना' सकर्मक क्रिया है। दूसरे वाक्य में पावनी तितली को उड़ने के लिए प्रेरित कर रही है, अतः यहाँ 'उड़ना' प्रेरणार्थक क्रिया है। ➢ अव्यय – अव्यय के विभिन्न भेदों को समझाकर पहचान करवाएँ। क्रियाविशेषण के भेदों की पहचान के लिए क्रिया के साथ कैसे, कितना, कब और कहाँ लगाकर पहचानने के लिए कहें। पाठ्य पुस्तक से उदहारण छँटवाकर अभ्यास करवाएँ। संबंधबोधक अव्यय और क्रियाविशेषण का अंतर समझाएँ। संबंधबोधक अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य के संज्ञा / सर्वनाम से संबंध बताता है। जैसे – ☛ तुम घर के *भीतर* जाओ। (संबंधबोधक) ☛ वह *भीतर* चला गया। (क्रिया विशेषण) ➢ समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद – समानाधिकरण और व्यधिकरण के बारे में बताएँ। ➢ विस्मयादिबोधक – हर्ष, घृणा, दुःख, पीड़ा, व्यक्त करने वाले शब्दों की जानकारी दें। ➢ निपात – बल देने वाले शब्द – तो, भी, पर, आदि के प्रयोग से वाक्य के अर्थ या भाव में आए परिवर्तनों की ओर ध्यान दिलाएँ; जैसे – मुझे भी पानी चाहिए। मुझे पानी भी चाहिए।	

पढ़ना एवं लिखना		
सुझावित विषय / क्षेत्र	**सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया**	**सुझावित अधिगम स्रोत**
	➢ वाच्य भेद – कर्तृवाच्य – मैं पाठ पढ़ती हूँ। कर्मवाच्य – सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों की मदद की घोषणा की गई। भाववाच्य – उस से चला नहीं जाता। इस प्रकार के वाक्यों का अभ्यास करवाएँ। परस्पर रूपांतरण भी करवाएँ। ➢ रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेदों की पहचान करना बताएँ। परस्पर रूपांतरण का अभ्यास भी करवाएँ। संयुक्त से मिश्रित या सरल, सरल से संयुक्त या मिश्रित, मिश्रित से संयुक्त या सरल वाक्यों में परिवर्तन का अभ्यास करवाएँ। ➢ उद्देश्य – विधेय की पहचान, जैसे – हमारे सैनिकों ने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए। इस वाक्य में 'हमारे सैनिकों ने' – उद्देश्य है और 'शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए' – विधेय है। अशुद्धि शोधन – अकसर होने वाली अशुद्धियों के बारे में बताएँ और वाक्य शोधन का अभ्यास करवाएँ। ➢ शब्द भंडार विकसित करने के लिए पिछली सूची में नए शब्द जोड़ें। ➢ पाठ्य सामग्री में आए मुहावरों / लोकोक्तियों का प्रयोग समझाएँ और अपने वाक्यों में पुनः प्रयोग करवाएँ। रचनात्मक लेखन में उसका प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें। ➢ रोचक अपठित गद्यांश और काव्यांश देकर प्रश्न अभ्यास करवाएँ। सामग्री को स्वयं समझने और उत्तर देने की क्षमता विकसित करें। ➢ पत्र लेखन – औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों के प्रारूप स्पष्ट करें। यह भी स्पष्ट करना कि पता, तिथि, विषय, संबोधन और समाप्ति की आवश्यकता क्यों है ? भाषा-शैली पर विशेष ध्यान दें। अति संक्षेप या अनावश्यक विस्तार से बचने की प्रेरणा दें (निमंत्रण, बधाई, संवेदना, धन्यवाद के अनौपचारिक पत्र तथा शिकायती पत्र, संपादक के नाम पत्र, प्रार्थना या आवेदन के औपचारिक पत्र लिखवाएँ)। ➢ निबंध लेखन के लिए विद्यार्थियों को उनके स्तर	

पढ़ना एवं लिखना		
सुझावित विषय / क्षेत्र	**सुझावित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया**	**सुझावित अधिगम स्रोत**
	के अनुकूल समसामयिक, उनसे संबद्ध और रोचक विषय देकर अभ्यास करवाएँ। निबंध का प्रारंभ मुख्य विषय-वस्तु और उपसंहार को स्पष्ट करें। अलग-अलग अनुच्छेदों में विचार क्रमबद्ध रूप से अभिव्यक्त करने को कहें। ये निबंध वर्णनात्मक, कल्पनात्मक आदि हो सकते हैं। ▷ विज्ञापन लेखन – वर्गीकृत, उत्पादों की बिक्री के लिए, जनहित में जारी विज्ञापन के नमूने दिखाकर समझाएँ और विज्ञापन बनवाएँ (विद्यालय में बनाई गई हस्तशिल्प सामग्री – मोमबत्तियाँ, दीये, वॉल हैंगिंग आदि) पेंसिल, पेन, पुरानी साइकिल बेचने हेतु, आदि)। ▷ डायरी लेखन – विशेष दिवस / अवसर / घटनाओं पर डायरी लेखन करवाएँ। ▷ नोटिस – नोटिस का प्रारूप समझाएँ और विद्यालय के क्रिया-कलापों से संबंधित नोटिस लिखवाएँ (वार्षिकोत्सव की तैयारी, नाटक मंचन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, खेल दिवस, स्कूल पत्रिका के लिए रचनाएँ आमंत्रित करने हेतु आदि)। ▷ विद्यालयी गतिविधियों पर प्रतिवेदन / रिपोर्ट लिखवाएँ (विद्यालय में मनाए गए वन महोत्सव, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ, खेल दिवस, भ्रमण आयोजन आदि की रिपोर्ट)। ▷ सुर्खियाँ लेखन - अखबार की रिपोर्ट देकर उसकी सुर्खियाँ लिखवाएँ। शब्द चयन आकर्षक हो, संक्षिप्त हो, इस पर चर्चा करें।	